सामाजिक विज्ञान

कक्षा 8

(इतिहास)

Chapter 3: ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना

To get notes visit our website

mukutclasses.in

अभ्यास के प्रश्न

फिर से याद करें

प्रश्न 1. निम्नलिखित के जोड़े बनाएँ-

रैयत	**ग्राम-समूह**
महाल	**किसान**
निज	**रैयतों की ज़मीन पर खेती**
रैयती	**बागान मालिकों की अपनी ज़मीन पर खेती**

उत्तर:

रैयत	किसान
महाल	ग्राम-समूह
निज	बागान मालिकों की अपनी ज़मीन पर खेती
रैयती	रैयतों की ज़मीन पर खेती

प्रश्न 2. रिक्त स्थान भरें-
(क) यूरोप में वोड उत्पादकों को _____से अपनी आमदनी में गिरावट का ख़तरा दिखाई देता था।
(ख) अठारहवीं सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग_____ कारण बढ़ने लगी।
(ग) _____की खोज से नील की अंतर्राष्ट्रीय माँग पर बुरा असर पड़ा।
(घ) चंपारण आंदोलन_____ के खिलाफ़ था।
उत्तर:
(क) यूरोप में वोड उत्पादकों को **नील** से अपनी आमदनी में गिरावट का ख़तरा दिखाई देता था।
(ख) अठारहवीं सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग **औद्योगीकरण** कारण बढ़ने लगी।
(ग) **कृत्रिम रंग** की खोज से नील की अंतर्राष्ट्रीय माँग पर बुरा असर पड़ा।
(घ) चंपारण आंदोलन **नील बागान मालिकों** के खिलाफ़ था।

आइए विचार करें

प्रश्न 3. स्थायी बंदोबस्त के मुख्य पहलुओं का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
(1) राजाओ और तालुकादारों को जमींदारों के रूप में मान्यता दी गई।
(2) उन्हें किसानों से लगान वसूलने और कंपनी को राजस्व चुकाने की जिम्मेदारी दी गई।
(3) उनकी ओर से चुकाई जाने वाली राशि स्थायी रूप से तय कर दी गई थी।
(4) भविष्य में कभी भी उसमें इजाफा नहीं किया जाना था।

प्रश्न 4. महालवारी व्यवस्था स्थायी बंदोबस्त के मुकाबले कैसे अलग थी?
उत्तर: (1) महालवारी व्यवस्था में राजस्व इक्कट्ठा करने और उसे कंपनी को अदा करने का जिम्मा गाँव के मुखिया को सौप दिया गया। जबकि स्थायी बंदोबस्त में यह जिम्मा जमींदारों के पास होता था।
(2) महालवारी बंदोबस्त में राजस्व की राशि स्थायी रूप से तय नहीं थी जबकि स्थायी बंदोबस्त में राजस्व की राशि निश्चित थी।

प्रश्न 5. राजस्व निर्धारण की नयी मुनरों व्यवस्था के कारण पैदा हुई दो समस्याएँ बताइए।
उत्तर: राजस्व निर्धारण की नयी मुनरों व्यवस्था के कारण पैदा हुई दो समस्याएँ निम्नलिखित हैं।
(i) ज़मीन से होने वाली आमदनी बढ़ाने के चक्कर में राजस्व अधिकारियों ने बहुत ज़्यादा राजस्व तय कर दिया था।किसान राजस्व चुका नहीं पा रहे थे।
(ii) रैयत गाँवों से भाग रहे थे। बहुत सारे क्षेत्रों में गाँव वीरान हो गए थे। अफ़सरों को उम्मीद थी कि नयी व्यवस्था किसानों को संपन्न उद्यमशील किसान बना देगी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

प्रश्न 6. रैयत नील की खेती से क्यों कतरा रहे थे?
उत्तर:
1. रैयतों को नील की खेती के लिए अग्रिम कर्ज दिया जाता था। जिसकी शर्तें बहुत कठोर थी।
2. उन्हें नील की बहुत कम कीमत मिलती थी। जिससे कर्ज़ भी नहीं चूकता था।
3. नील की खेती से खेतों का उपजाऊपन खत्म हो जाता था।
4. ऐसे खेतों में धान की फसल नहीं उग पाती थी।

प्रश्न 7. किन परिस्थितियों में बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया?
उत्तर: निम्नलिखित परिस्थितयों में बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया
1. मार्च 1859 में बंगाल के किसानों ने नील की खेती करने से इन्कार कर दिया।
2. इस बगावत से परेशान होकर सरकार ने नील आयोग बना दिया।
3. आयोग ने बागान मालिकों को दोषी पाया ।
4. किसानों को कहा गया कि नील की खेती बन्द कर सकते हैं।
5. इस प्रकार बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया।

आइए करके देखें

प्रश्न 8. चंपारण आंदोलन और उसमें महात्मा गांधी की भूमिका के बारे में और जानकारियाँ इकट्ठा करें।
उत्तर: बंगाल में इंडिगो उत्पादन के पतन के बाद, इंडिगो के यूरोपीय प्लांटर्स ने अपने कार्यों को बिहार में स्थानांतरित कर दिया। जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौटे, तो बिहार के एक किसान ने उन्हें चंपारण आने और वहां नील की खेती करने वालों की दुर्दशा देखने के लिए राजी किया। 1917 में महात्मा गांधी की इस यात्रा को इंडिगो प्लांटर्स के खिलाफ चंपारण आंदोलन की शुरुआत के रूप में चिह्नित किया गया था। यूरोपीय बागान मालिकों ने किसानों पर अत्याचार किया। किसानों की दयनीय स्थिति देखने के लिए महात्मा गांधी चंपारण पहुंचे। जिले के अधिकारियों ने उन्हें चंपारण छोड़ने का आदेश दिया लेकिन उन्होंने आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया और सत्याग्रह शुरू कर दिया।